International Journal of Creative Research Thoughts
*Volume 1, Issue.4, April 2013*
*ISSN:-2320-2882*

ORIGINAL ARTICLE

# साहित्य और संस्कार

अजीत द्विवेदी
शोध छात्र
अ.प्र.सिंह वि.वि. रीवा (म.प्र.)

## सार :

प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय साहित्य में घुले संस्कारों की छवि प्रस्तुत करता है। साहित्य का व्यक्ति और समाज पर प्रभाव और व्यक्ति तथा समाज का साहित्य पर प्रभाव साथ ही साहित्य और संस्कार के अंतर सह संबंध का प्रस्तुतीकरण करता है। बालक जन्म से कोरी स्लेट की भॉति होता है। समाज में मौजूद साहित्य के आदर्श पात्रों की भाँति बनाना हर माता–पिता का दायित्व होता है, हर माता–पिता अपने बच्चे को अभिमन्यु, उपमन्यु, ध्रुव तथा प्रहलाद जैसा देखना चाहते हैं। यह शोध पत्र न केवल साहित्य से बच्चों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक संज्ञानात्मक भावात्मक और आध्यात्मिक संबंध बताता है, बल्कि किसी आदर्श व्यक्ति को साहित्य किस रूप में प्रस्तुत करता है इसे भी प्रस्तुत करता है। वर्तमान में अन्ना हजारे ने समाज हेतु जो त्याग किया है, उसके ऊपर सृजित साहित्य बहुत कम बयां करता है। महाराणा प्रताप के दृढ़ निश्चय पर सृजित साहित्य को पढ़कर शायद ही कोई मनुष्य हो जिसमें वीर रस का संचार न होता हो। घोड़े पर सवार महाराणा प्रताप के जीवन दृष्टि का जो स्वरूप दिखाता है, वह अत्यंत मनोरम है। सुभाषचन्द्र बोस के ऊपर लिखे उपन्यास 'महानायक' और महावीर कर्ण के ऊपर लिखे उपन्यास 'मृत्युंजय' ये साहित्य व्यक्ति के कर्तव्यों के कारण सृजित हुए। प्रमुख बात यह है कि पहले साहित्य मनुष्य को आदर्श मार्ग की ओर प्रेरित करता है। लेकिन अगर कोई व्यक्ति अपने कार्यों से आदर्श स्थापित कर दे तो साहित्य उसका अनुकरण और अनुसरण करने लगता है।

## प्रस्तावना :

साहित्य और संस्कार से ही समाज बना है, हमारे पूर्वजों ने बच्चे के जन्म के पूर्व से ही संस्कार के महत्व को माना है। भारतीय साहित्य में सोलह संस्कारों का वर्णन

**Please cite this Article as :** अजीत द्विवेदी ,साहित्य और संस्कार **:International Journal Of Creative Research Thoughts,Volume 1, Issue.4, April 2013**

मिलता है। संस्कार बच्चे के गर्भ में आ जाने के बाद से ही शुरू हो जाते हैं। समाजोपयोगी बनाने हेतु या यूँ कहें कि व्यक्तित्व का समग्र विकास करने हेतु ये संस्कार जरूरी हैं, तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। इन संस्कारों का महत्व साहित्य में स्पष्ट होता है। वर्तमान के साहित्यकारों में नरेन्द्र कोहली का बहुचर्चित उपन्यास 'महासमर', महाभारत के हर अच्छे बुरे पात्र का इस तरह जीवन्त वर्णन करता है, कि लगता है कि पाठक चलचित्र देख रहा है। स्वामी विवेकानन्द पर नरेन्द्र कोहली द्वारा लिखित वैज्ञानिक साहित्य संस्कारों के पर्याय स्वामी जी के जीवन को अत्यंत ही सुन्दर अभिव्यक्ति देता है। एकाग्रता जेा न कि केवल छात्रों की सफलता की चाबी है, बल्कि पूरे समाज की उन्नति का मार्ग है, पर लिखे गये बहुचर्चित उपन्यास 'एकाग्रता का मनोविज्ञान और छात्र जीवन में उपयोगिता छात्रों के लिये एकाग्रता की आवश्यकता के साथ–साथ इसके चमत्कारों की वैज्ञानिक व्याख्या करता हैं।

एकाग्रता एक ऐसी विद्या है जिसकी आवश्यकता हमें लौकिक एवं अलौकिक दोनों ही जीवन में पड़ती है। इसे जितना ही प्रगाढ़ बनाया जा सके, जीवन उतना ही सफल होता है। मनुष्य ने जो प्राप्त किया या जो प्राप्त करना चाहता है, दोनों ही क्षेत्रों में एकाग्रता का अपना महत्व है। हमारे जीवन का लक्ष्य पूर्णता को प्राप्त करना है। जीवन के प्रत्येक आयाम पर आज उपयोगी साहित्य की कमी नहीं है। वैसे तो जमीन देखने पर धूल मिट्टी से युक्त बिना काम की प्रतीत होती है किन्तु इस जमीन को खोदा जाये तो इसके अंदर हीरा, कोयला जैसी बहुमूल्य वस्तुओं के साथ रबी और खरीफ की फसलें भी मिलती हैं। हिन्दी के प्रत्येक काल में भारत में ऐसे साहित्यकारों ने जन्म लिया है, जो खुद संस्कार और साहित्य बन गये हैं। व्यक्ति को आत्मविश्लेषण करके यह सर्वप्रथम जानना चाहिये कि कौन सा साहित्य उसके लिये उपयोगी है और उसी प्रकार के साहित्य का चयन व्यक्तित्व विकास हेतु उसे करना चाहिये। अगर व्यक्ति अपनी प्रकृति के अनुसार साहित्य का चयन करने में समर्थ हो सके तो उसका संपूर्ण विकास निश्चित ही संभव है। मन को शांति तब तक प्राप्त नहीं हो सकती जब तक वह समाज के प्रति अपने कर्तव्य का पालन न करे। साहित्य साधना से व्यक्तिगत उद्देश्य अर्थात व्यक्ति निर्माण की प्रक्रिया की प्रक्रिया पूरी हो जाती है।

विवेचना :

संसार के सभी आदर्श ग्रंथ रचनात्मक के प्रमाण है, वह चाहे महाभारत या रामायण हो या बाईबिल या गीता, साहित्य का सृजन ही सृजनात्मकता को प्रेरित करता हैं। साहित्य संस्कार का जनक है। साहित्य आदर्शों का समुच्चय, उत्कृष्टता का पर्याय और भावनात्मक उन्नति का मार्ग है। हमारे देश में साहित्य की उत्कृष्टता के पर्याय बन चुके 'गोदान' की बात करें तो प्रेमचन्द ने 'गोदान' में जहाँ एक ओर सामाजिक एवं पारिवारिक कुरीतियों का चित्रण किया है वहीं दूसरी ओर आदर्श जीवन की ओर संकेत भी किया है। गोदान पढ़ने वाला जहाँ यह कदापि नहीं कह सकता कि मालती को भी वही हृदय मिला है, और शायद यह भी नहीं कह सकता कि मेहता जैसे व्यक्ति को सिद्धान्तों से हार खानी पढ़ेगी। गोदान में मालती के संस्कार उसे समाज की आदर्श नारी की उपाधि देते हैं, इसीलिए यह स्पष्ट है कि साहित्य व्यक्ति के साथ–साथ समाज का भी दर्पण होता है। साहित्य समाज की कमियों को उजागर करता है, तो साहित्य यह भी बताता है कि यह कमियाँ कैसे दूर हो सकती हैं, रामचरितमानस, कामायनी, रंगभूमि, कर्मभूमि आदि सब समाज के संस्कारों को स्पष्ट करते हैं। समाज का चरित्र स्पष्ट करते हैं। अन्ततः एक आदर्श समाज की कल्पना का सवरूप प्रस्तुत करते हैं। साहित्य जहाँ संस्कारित हो आदर्श व्यवहार को प्रेरित करता है वहीं आदर्श सस्कारों का उदाहरण भी प्रस्तुत करता है।

रामायण में राम और भरत तथा महाभारत में पाण्डवों और श्रीकृष्ण का चरित्र इसका उदाहरण है। हिन्दी साहित्य जहाँ संस्कारों में श्रृंगार रस को घोलने की बात करता है वहीं वीर रस को भी प्रेरित करता है। हास्य मानव जीवन का एक श्रृंगार ही है। अतः मनोवैज्ञानिक उपलब्धता और उपयोगिता को समझ कर संस्कारों को सम्मिलित करने की बात करता है। साहित्य को मानव जीवन का निश्चित ही आवश्यक अंग समझता है। हिन्दी साहित्य में वर्णित सभी रस मानवता का प्रतिनिधित्व करते हैं। यशोधरा, राधा, उर्मिला जैसे संस्कारित पात्रों का वर्णन द्विवेदी युगीन साहित्य में किया गया तो छायावाद में सौन्दर्य और प्रेम जैसे संस्कारों पर प्रकाश डाला गया। जैनेन्द्र को ही देख लें तो उन्होंने अपनी रचना में एक स्पष्ट संस्कार की कल्पना की है। जैनेन्द्र के उपन्यासों में 'सुनीता' का एक विशेष स्थान है। इस उपन्यास में न तो 'घर' टूटा है और

न 'बाहर' के प्रति उसे बन्द ही किया है। 'घर' (सुनीता–श्रीकान्त) और 'बाहर' (हरिप्रसन्न) दोनों परस्परापेक्षाशील हैं। यह एक उच्च आदर्श है जिसे प्राप्त करने में लेखक सफल रहा है। जसी (2012)

विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक का उपन्यास 'भिखारिणी' संस्कार से विमुख जाने वालों के विरूद्ध आवाज उठाता है। यह स्पष्ट करता है, कि संस्कार के विमुख जाने वालों की क्या गति हो सकती है। प्रताप नारायण मिश्र के 'विदा' उपन्यास से भारतीय संस्कारों की खुशबू आती है। इसके लगभग सारे ही पात्र आदर्श प्रधान है। यह एक अत्यंत जीवनोपयोगी साहित्य है। प्रेमचन्द ने लिखा है – भारतीय समाज में बड़े–बड़े परिवर्तन हो रहे हैं पुराने विचारों और विश्वासों की जड़ें हिलती जा रही हैं, और एक नये समाज का जन्म हो रहा है, वही भारतीय साहित्यकरों का धर्म है कि वह भारतीय जीवन में पैदा होने वाली भ्रांति को शब्द और रूप दें और राष्ट्र को उन्नति के मार्ग में चलाने में सहायक हों। इतना ही नहीं प्रेमचन्द्र, ईश्वर जो संस्कारों का पर्याय है के बारे में कहते हैं–''अगर ईश्वर इस शुद्धता की प्राप्ति में सहायक है तो शौक से इसका ध्यान को दीजिये लेकिन इसके नाम पर हर एक धर्म में जो स्वांग हो रहा है, उसकी जड़ खोजना ईश्वर की सबसे बड़ी सेवा है। छायावाद ने रीतिकालीन काव्य–चेतना और उसके मूल्यों का निषेध करने का संघर्ष किया। लेकिन प्रेमचन्द के कथा–साहित्य ने अपने समय की जनता की जिंदगी का यथार्थ चित्रण करके, अमानुषिक जीवन जी रही जनता के बीच से पात्रों को उठाकर जीवन, साहित्य, सौंदर्य–बोध सब कुछ का आधुनिक विकल्प दिया।

## उपसंहार :

अन्तः यह स्पष्ट है कि श्रेष्ठ साहित्य जनमानस के विचारों और भावों से जुड़ कर संस्कार का निर्माण करता हैं यह न केवल संस्कारों की अभिव्यक्ति करता है, बल्कि संस्कारों की खेती भी साहित्य से ही होती है, और ये संस्कार किसी व्यक्ति समाज और देश की प्रगति में उपयोगी सिद्ध होते हैं।

## संदर्भ :


- अमृतराय–कलम का सिपाही, पृष्ठ (608)
- डॉ. चन्द्रभान रावत–दृष्टि और दिशा : साहित्यिक निबंध पृष्ठ सं. –38
- तिवारी, डॉ. रामचन्द्र : हिन्दी का गद्य साहित्य, पृ. 123, हिन्दी आलोचना का विकास, हिन्दी के नए समीक्षक, तृतीय संस्करण, 1992 विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
- पुरूषोत्तम लाल श्रीवास्तव–आदर्श और यथार्थ पृष्ठ सं.–127–129
- प्रेमचन्द : विगत महत्ता और वर्तमान अर्थवत्ता–मुरली मनोहर प्रसाद सिंह/रेखा अवस्थी नवजागरण का संदर्भ–खगेन्द्र ठाकुर, पृष्ठ (91)
- प्रेमचन्द : विगत महत्ता और वर्तमान अर्थवत्ता–मुरली मनोहर प्रसाद सिंह रेखा अवस्थी–नवजागरण का संदर्भ–खगेन्द्र ठाकुर, पृष्ठ (93)
- वही पृ. 46।
- डॉ. नामवर सिंह, प्रधान सम्पादक–अलोचना (त्रैमासिक) सहस्राब्दी अंक तेईस, पृ. 42,
- डॉ. नामवर सिंह, : कहना न होगा, पृ. 144 सं. 2005 प्रकाशन, नई दिल्ली।